Sociology

B-I (H) Paper-II 1

Critically discuss max Weber's theory of Social action?

मैक्स वेबर के सामाजिक क्रिया के सिद्धांत का आलोचनात्मक वर्णन करें?

जर्मनी के एक महत्वपूर्ण समाजशास्त्री Max Weber समाजशास्त्र के क्षेत्र में न केवल स्वरूपात्मक संप्रदाय (Formal School) के प्रतिनिधी माने जाते हैं बल्कि सामाजिक क्रिया सम्प्रदाय (Social action school) के भी प्रतिनिधी माने जाते हैं। इन्होंने सामाजिक क्रिया के अध्ययन पर बल दिया है और सामाजिक क्रिया का अध्ययन करना समाजशास्त्र की मुख्य विषय-वस्तु बताया है। समाजशास्त्र को सामाजिक क्रिया का अध्ययन करने वाले विज्ञानों के रुप में परिभाषित करते हुए Max Weber ने लिखा है "समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो सामाजिक क्रिया का निर्वचनात्मक बोध कराने का प्रयत्न करता है जिससे इसकी (सामाजिक क्रिया की) गतिविधी तथा परिणामों के कारण सहित व्याख्या प्रस्तुत की जा सके।"

(Sociology is the science which attempts the interpretive understanding of Social action in order there by to arrive at a causal explanation of its course & results)

Max Weber ने इस बात का भी उल्लेख किया है कि समाजशास्त्र केवल सामाजिक क्रिया के अध्ययन तक ही सीमित नही है। इनके अनुसार सामाजिक क्रिया का अध्ययन करना समाजशास्त्रीय अध्ययन का केन्द्रिय अध्ययन विषय है।

Max Weber ने अपने सामाजिक क्रिया के सिद्धांत में सर्वप्रथम सामाजिक क्रिया को परिभाषित किया है और लिखा है, "व्यक्ति या व्यक्तियों की क्रिया सामाजिक तभी है जब कर्ता उसका कोई प्रातीतिक अर्थ लगावें, वह के व्यवहार से प्रभावित हो और उसके अनुसार उसकी गति निर्धारित हो।"

(Action is Social in so far as by virtue of the subjective meaning attached to it by the acting individual (or individuals) & it takes into account the behavior of others & is these by oriented to its course)

Max Weber ने इस बात का भी उल्लेख किया है कि प्रत्येक मानवीय क्रिया सामाजिक क्रिया नही कही जा सकती। इन्होंने वैयक्तिक क्रिया और सामाजिक क्रिया दोनो को एक दुसरे से भिन्न माना है। इन्होंने अपने सामाजिक क्रिया के सिद्धांत में इस बात की चर्चा की है कि किसी भी क्रिया को सामाजिक क्रिया कहने से पहले निम्नलिखित चार बातों को ध्यान में रखना चाहिए :-

(1) "सामाजिक क्रिया जिसमें, क्रिया करने की असफलता और शांत तथा मौन स्वीकृति भी सम्मिलित है, दुसरों के दिए हुए, किये जा रहे या प्रत्याशील भावी व्यवहार से प्रभावित हो सकती है।" (Social action, which includes both failure to act & passive acquiescence, may be oriented to the past, present or expected future behaviour of others)

इसका अर्थ सामाजिक क्रिया दुसरे व्यक्तियों (परिचित या अपरिचित)

के भूतकाल, वर्तमान या भावी व्यवहार द्वारा प्रभावित हो सकती है। दूसरे
शब्दों में यह कहा जा सकता है कि यदि हमारी कोई क्रिया किसी अन्य व्यक्-
ति के भूतकाल या वर्तमान काल अथवा भावी व्यवहार द्वारा प्रभावित
होती उसे सामाजिक क्रिया कहा जा सकता है। उदाहरणार्थ – यदि Mr. X ने
Mr. Y के परिवार के किसी सदस्य को कत्ल करने का कार्य इसलिए किया
क्योंकी अतीत में Mr. Y ने Mr. X के परिवार के किसी सदस्य का कत्ल किया था तो इस क्रिया को सामाजिक क्रिया कहा जा सकता है क्योंकी Mr. X
की कत्ल करने की क्रिया Mr. Y की अतित की क्रिया से प्रभावित है अथवा
इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप है।

(2) Max Weber के अनुसार प्रत्येक प्रकार की क्रिया, यहाँ तक कि प्रत्येक
प्रकार की बाह्य रूप से दृष्टिगोचर होने वाली क्रिया सामाजिक क्रिया नहीं
कही जा सकती। यदि हम अचेतन वस्तुओं से प्रभावित होकर कोई क्रिया करते
है तब उसे सामाजिक क्रिया नहीं कहा जा सकता। Max Weber के ही शब्दों
में "प्रत्येक प्रकार की क्रिया, जहाँ तक कि प्रत्येक प्रकार की बाह्य क्रिया,
सामाजिक क्रिया नहीं कही जा सकती। बाह्य क्रिया असामाजिक है यदि वह केवल जड़ अर्थात बेजानदार वस्तुओं द्वारा प्रभावित होती है।" (Not every ki-
nd of action, even of overt action, is 'social' in the sense of the pre-
sent discussion. overt action is non-social if it is oriented solely
of the behaviour of inanimate objects) उदाहरणार्थ- देवी- देवताओं की
पत्थर की मूर्तियाँ बेजानदार वस्तुएँ है यदि कोई व्यक्ति देवी- देवताओं की मूर्ति-
यों के सामने ध्यान लगाकर बैठे रहने या उनकी प्रार्थना अथवा अराधना
करने की क्रिया करता है तो उसे सामाजिक क्रिया नहीं कहा जा सकता क्योंकी
हमारी यह क्रिया बेजानदार मूर्तियों से प्रभावित है। इसके विपरीत यदि हम
एक ब्राह्मण पुरोहित द्वारा उच्चारित मंत्र को कहते हुए मूर्तियों पर फूल-अक्ष-
त चढ़ाते है तो वह क्रिया सामाजिक कही जा सकती है क्योंकी फूल
अक्षत चढ़ाने की यह क्रिया ब्राह्मण पुरोहित अर्थात एक जानदार व्यक्ति
के व्यवहार से प्रभावित है।

(3) Max Weber के अनुसार मानव प्राणियों के प्रत्येक प्रकार का सम्पर्क भी सा-
माजिक नहीं कही जा सकती। Max Weber के ही शब्दों में "मानव प्राणियों के
प्रत्येक प्रकार के सम्पर्क की प्रकृति सामाजिक नहीं होती। यह उन्हीं दशाओं
तक सीमित है जहाँ तक कर्ता का व्यवहार दूसरों के व्यवहार से अर्थपूर्ण दृष्टि से
प्रभावित है।" (Not every type of contact of human beings has a soci-
al character, this is rather confined to cases where the actor's beha-
viour is meaningfully oriented to that of others) इसका अर्थ
मानव प्राणियों का सम्पर्क उसी सीमा तक सामाजिक कहा जाएगा जहाँ तक

Scanned with CamScanner

कर्ता का व्यवहार दूसरों के व्यवहार से अर्थपूर्ण ढंग से सम्बन्धित और प्रभावित है। उदाहरणार्थ → यदि दो रिक्सा चालक रिक्सा चलाते समय आपस में टकरा जाएँ तो इस सम्पर्क को या टकराने की क्रिया को सामाजिक क्रिया नहीं कहा जा सकता क्योंकि एक रिक्सा चालक का व्यवहार दूसरे रिक्सा चालक के व्यवहार से प्रभावित नहीं है। यदि रिक्सा चालक टकरा जाने के बाद आपस में गाली-गलौज करने लगे या मार-पीट करने लगे तो उनकी इस क्रिया को सामाजिक क्रिया कहा जा सकता है क्योंकी इसमें एक का व्यवहार दूसरे के व्यवहार से प्रभावित है।

(4) Max Weber के अनुसार सामाजिक क्रिया न तो अनेक व्यक्तियों द्वारा की जाने वाली एक सी क्रिया को कहते हैं और न ही यह दूसरे व्यक्तियों का अनुकरण मात्र है। Max Weber के ही शब्दों में "सामाजिक क्रिया अनेक व्यक्तियों की एक सी क्रिया या दूसरे व्यक्तियों से प्रभावित क्रिया के स्वरूप नहीं है" (Social action is not identical either with the similar actions of many persons or with action influenced by other persons) उदाहरणार्थ - वर्षात के दिनों में जब वर्षा होने लगती है तब सड़क पर चलने वाले बहुत से लोग अपना-अपना छाता खोल देते हैं। यहाँ पर सभी व्यक्तियों की क्रियाएँ एक सी प्रतीत होती हैं किंतु इस क्रिया को सामाजिक क्रिया नहीं कहा जा सकता इसका कारण यह है कि छाता खोलने वाले व्यक्तियों की क्रियाओं का सीधे एवं अन्य व्यक्तियों की क्रियाओं से नहीं है या छाता खोलने की क्रिया दूसरे व्यक्ति के छाता खोलने की क्रिया से प्रभावित नहीं है। उसकी यह क्रिया तो वर्षा होने से प्रभावित है। वर्षात के दिनों में सड़क पर चलने वाले व्यक्ति वर्षा से बचाव के लिए छाता खोलते हैं, न कि दूसरे व्यक्ति का अनुकरण करके खोलते हैं। Max Weber अपने सामाजिक क्रिया के सिद्धांत में इस बात की चर्चा की है कि कुछ व्यवहारों का अनुकरण करने की क्रिया सामाजिक क्रिया कही जा सकती है किंतु अनुकरण करने की सभी क्रियाएँ सामाजिक नहीं कही जा सकती। Max Weber के ही शब्दों में "दूसरों की क्रिया का अनुकरण जिस पर टार्डे ने बहुत अधिक जोर दिया है, विशेष रूप से सामाजिक क्रिया नहीं मानी जाएगी यदि वह विशुद्ध प्रतिक्रिया मात्र है और अनुकरण किये जाने वाले कर्ता से अर्थपूर्ण दृष्टि से सम्बन्ध नहीं है" ('Imitation' of the action of others, such as that on which tarde has rightly laid emphasis, will not be considered a case of specifically Social action if it is purely reactive so that their is no meaningful orientation to the actor imitated) इसका अर्थ अनुकरण करने की वही क्रिया सामाजिक कही जा सकती है जिसका अन्य व्यक्तियों की क्रियाओं से अर्थपूर्ण सम्बन्ध हो। उदाहरणार्थ - यदि कोई छात्र किसी दूसरे छात्र को किसी Short-cut रास्ते से College जाते हुए देखकर दूसरे दिन उसी का अनुकरण कर

Scanned with CamScanner

A

Short-Cut रास्ते से जाने वाले विद्यार्थी की क्रिया पहले दिन Short-Cut रास्ते से जाने वाले विद्यार्थी से अर्थपूर्ण रूप में सम्बन्धित नहीं है किंतु यदि कोई छात्र ड्रिल मास्टर की क्रिया का अनुकरण करे तो वह क्रिया सामाजिक क्रिया कही जा सकती है क्योंकी उसकी वह क्रिया ड्रिल मास्टर की क्रिया से जिसका वह अनुकरण कर रहा है, अर्थपूर्ण रूप से सम्बन्धित है।

Max Weber ने अपने सामाजिक क्रिया के सिद्धांत में सामाजिक क्रिया के प्रकारों का भी उल्लेख किया है जो निम्नलिखित है :-

(1) परम्परागत क्रिया (Traditional action) → परम्परागत क्रिया वह क्रिया है जो सामाजिक प्रथाओं तथा परम्पराओं द्वारा नियंत्रित होती है और जो अनेक व्यक्तियों द्वारा एक लम्बी अवधी से की जाती रही है। प्रथाओं का अनुकरण करना परम्परागत क्रियाओं का उदाहरण है। विवाह के अवसर पर कुछ धार्मिक क्रियाएँ करना, औरतों द्वारा गीत गाया जाना, एक व्यक्ति के मृत्यु के पश्चात श्राद्धभोज करने का आयोजन करना, वर्ग में शिक्षक के प्रवेश करने पर छात्र और छात्राओं द्वारा खड़ा हो जाना, सिखों के सिर के ऊपर पगड़ी बाँधना, मुस्लिम स्त्रियोंका बुर्का का प्रयोग करना परम्परागत क्रिया के उदाहरण कहे जा सकते है।

(2) तार्किक क्रिया (Rational action) → जो क्रिया सचेत रूप में उत्पन्न हुई हो या योजना के अनुसार की गई हो और उसमें लक्ष्य तथा साधनों का पूर्ण ध्यान रखा गया हो उसे तार्किक क्रिया कहा जा सकता है। उदाहरणार्थ - यदि कोई व्यक्ति कोई उद्योग धंधा स्थापित करने से पहले इस बात पर पूरा ध्यान देता है कि किस वस्तु के निर्माण से सम्बन्धित उद्योग धंधा प्रारंभ करने पर उसकी मांग बनी रहेगी और एक योजनाबद्ध रूप में किसी उद्योग धंधा को स्थापित करता है। इसके लिए लक्ष्य तथा साधनों दोनों पर ही तार्किक ढंग से विचार करता है तब उसकी इस क्रिया को तार्किक क्रिया कहा जा सकता है।

(3) प्रभावात्मक क्रिया (Effective action) → वह क्रिया जो आवेगों या संवेगो द्वारा प्रेरित होती है प्रभावात्मक क्रिया कही जा सकती है। कभी-कभी व्यक्ति शत्रुतावस या घृणा और प्रेम के कारण या प्रेम के प्रवाह में आकर कोई क्रिया कर देता है। ऐसी ही क्रिया प्रभावात्मक क्रिया कही जा सकती है। उदाहरणार्थ - एक व्यक्ति अपनी पत्नि को अन्य पुरुषों के साथ यौन क्रिया में लिप्त रहते हुए देखकर अधधिक क्रोध के कारण आवेश में आकर अपनी पत्नि याउसके प्रेमी को गोली मारने की क्रिया करता है तो उसकी यह क्रिया प्रभावात्मक क्रिया कही जाएगी। चूकी इस तरह की क्रिया आवेगों या संवेगों द्वारा प्रभावित होती है। अतः कभी-कभी इस तरह की क्रिया संवेगात्मक क्रिया (Emotional action) भी कहा जाता है।

(4) मूल्यांकनात्मक क्रिया (Evaluative action) → जो क्रिया कलात्मक, धार्मिक, या नैतिक आधार पर की जाती है, और जिसे बिना किसी तार्किक कारण के स्वीकार

Scanned with CamScanner

भी कर लिया जाता है। उसे मूल्यांकनात्मक क्रिया कहा जाता है। इस तरह की क्रिया कि उपयोगिता का मूल्यांकन नहीं किया जाता है बल्कि यों ही स्वीकार कर लिया जाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार की क्रिया के औचित्य का मूल्यांकन धार्मिक विश्वासों के आधार पर किया जाता है। उदाहरणार्थ- एक हिन्दु निश्चित रूप से यह नहीं जानता है कि प्रतिमाह सत्यनारायण भगवान की पूजा कराने से क्या लाभ मिलेगा फिर भी बहुत लोग अपने घरों में निश्चित रूप से सत्य नारायण भगवान की पूजा का आयोजन करते हैं और इस क्रिया का मूल्यांकन कष्टों से छुटकारा पाने की आशा, सुरक्षा भविष्य आदि के आधार पर करते हैं।

S.N. Choudhary
1
L.N.M.U